بِسْمِ لِللهِ الرَّحْمِنِ الرَّحِيمِ

AL-QURAN THE CRITERION



INTERNATIONAL
ISLAMIC PROPAGATION
CENTRE CANADA

अल-कुरआन क्या कहता है

उम्मुल कुरा/शहरों की माँ के बारे में

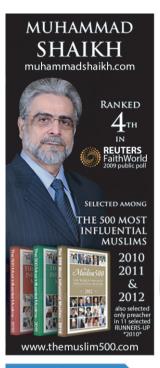
संकलक: मुहम्मद शेख

#अब्दुल्लाह #क्रआनकाबश

23 फरवरी 2019 को IIPC कनाडा द्वारा प्रकाशित



92



महम्मद शेख को शेख अहमद दीदात द्वारा 1988 में डरबन .दक्षिण अफ्रीका के IPCI दवारा आयोजित दावा और त्लनात्मक धर्म पर प्रशिक्षण लेने के लिए चना गया था। इस दावा और तुलनात्मक धर्म प्रशिक्षण के पुरा होने पर महम्मद शेख^{ें}को IPCI दवारा एक प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया था जिसे स्वयं माननीय शेख अहमद दीदत ने प्रस्तृत किया था



दान करें :-

शीर्षक:-डन्टरनेशनल डस्लामिक प्रोपेगेशन सेन्टर कनाडा 7060 मकलाउघलीं रोड मिससीससाउगा ONI 5W1W7 कनादा

बैंक का नाम- TD CANADA TRUST

अकाउंट नम्बर:5042218 टांसिट नम्बर- 15972

कनाडा IBAN - 026009593 (अमेरिका से दान देने वालों के लिए) ABA026009593

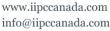
स्विफ्ट कोड:TDOMCATTTOR इंसटीट्युशन नम्बर- 004 शाखा का नम्बर:1597

132 मैन ST साउथ, रॉकवुड, ON NOB 2KO ,कनाडा 1-800-867-0180



अभी पंजीकरण करें







सोशल मीडिया नेटवर्क

You Tube

facebook.

App Store

Google play

Instagram

ÉTV

androidty

Roku

amazon firetv

ON INVIDIA. SHIELD

OTT PLAYER

Podcasts

TIKILIVE

ml Mi Box



Jaco Co



Shava



ZAAPTV



wwiTV



mean T



RAVO







पुस्तिका का परिचय

पुस्तिका के बारे में यह मुहम्मद शेख द्वारा संकलित एक व्याख्यान संदर्भ पुस्तिका है यह हर विषय के व्याख्यान के अनुसार है इस पुस्तिका का उद्देश्य पाठक को कुरआन के विषय से परिचित कराना है। इसका अध्ययन स्वयं किया जा सकता है और यह हर विषय के वीडियो व्याख्यान को भी पूरा करता है जो इसके ही साथ होता है। वीडियो व्याख्यान में चर्चा के अनुसार इस प्स्तिका में विषय से संबंधित आयत (क्रआन की आयतें) हैं। व्याख्यान के बाद प्रश्न उठाए जाते हैं, और उनके उत्तर आयत द्वारा दिए जाते हैं। वीडियो व्याख्यान और उनके व्याख्यान संदर्भ पुस्तिकाएं हमारी वेबसाइट www.iipccanada.com पर उपलब्ध हैं। यहां दिए गए कुरआन के संदर्भ संपूर्ण नहीं हैं, लेकिन विषय का मूल सार प्रस्त्त करते हैं। इस प्रकाशन में जिन संदर्भों को बाहर रखा गया है, उन्हें किसी भी अच्छी सहमति का उपयोग करके शोध किया जा सकता है और यह पता चलेगा कि इस प्रकाशन में पेश किया गया चयन पूरे अनुक्रम में सामंजस्य स्थापित करेगा। यह आशा की जाती है कि म्स्लिम(आज्ञाकारी) पाठक इन आयतों को अपने अरबी पाठ के साथ याद करेंगे और अपने मित्रों और सहयोगियों को दावत (इस्लाम का प्रचार) में संलग्न करेंगे, और अपनी सलाह/प्रार्थना में भी इसे पढ सकेंगे। इस तरह, प्स्तिका रोज़मर्रा की ज़िंदगी में म्स्लिम के लिए एक उपयोगी उपकरण बन जाती है - इंशाअल्लाह। आयत का अन्वाद मुहम्मद शेख ने किया है। विषय के संबंध में किसी भी प्रश्न, टिप्पणी या सुझाव का ईमेल के माध्यम से किया जा सकता है: info@iipccanada.com

AL-QURAN THE CRITERION



मुहम्मद शेख के बारे में

मुहम्मद शेख इस्लाम और तुलनात्मक धर्म पर एक सार्वजनिक वक्ता हैं। उनके व्याख्यान कुरआन के पाठ पर आधारित हैं जो कई गलत धारणाओं को दूर करने, प्रामाणिक इस्लामी

मान्यताओं को प्रस्तुत करने और कुरआन के अपने आंतरिक सब्त के आधार पर तर्कसंगत और उद्देश्य विश्लेषण के लिए अपील करने का काम करते हैं। राजनीतिक या सांप्रदायिक पक्ष लिए बिना, वह लोगों को यह समझने और विश्लेषण करने के लिए कहते है कि कुरआन सबसे पहले किसी विषय के बारे में क्या कहता है, क्योंकि यह कुरआन है जो इस्लाम का प्रमुख आधिकारिक पाठ और अल्लाह/भगवान का वचन और मानव जाति के लिए स्पष्ट सच्चाई है। मुहम्मद शेख को कराची पाकिस्तान से शेख अहमद दीदत द्वारा 1988 में IPCI डरबन दक्षिण अफ्रीका द्वारा आयोजित दावाह और तुलनात्मक धर्म पर प्रशिक्षण से गुजरने के लिए चुना गया था। इस दावाह कोर्स के पूरा होने के बाद मुहम्मद शेख को IPCI से एक प्रमाण पत्र प्रदान किया गया था जिसे स्वयं माननीय शेख अहमद दीदात ने प्रस्तुत किया था।

AL-QURAN THE CRITERION



IIPC-इंटरनेशनल इस्लामिक प्रोपेगेशन सेंटर के बारे में

इंटरनेशनल इस्लामिक प्रोपेगेशन सेंटर (IIPC)

एक दावाह संगठन है जिसका उददेश्य ISLAMIC PROPAGATION अल-क्रआन अल्लाह/भगवान की प्स्तक को बढ़ावा देना है, IIPC की स्थापना 1987 में मुहम्मद शेख द्वारा कराची, पाकिस्तान में की गई थी। हालाँकि IIPC का वर्तमान स्थान एक पंजीकृत धर्मार्थ संगठन के रूप में रॉकव्ड, कनाडा में है। यह मुहम्मद शेख द्वारा दिए गए व्याख्यानों के माध्यम से अल-कुरआन को समझने और सराहना करने के लिए सभी धर्मों और आस्था रखने वाले लोगों को आमंत्रित करता है, और यह आयोजन, मुद्रित प्रकाशनों इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रोडक्शंस, इंटरनेट टीवी द्वारा प्रसारण और इसकी वेबसाइट के माध्यम से जनता तक पहुंचने का प्रयास करता है। केंद्र अल-इस्लाम को अल्लाहं/भगवान की आयत(निशानी) के आधार पर अपने प्राचीन रूप में प्रचारित करने का प्रयास करता है ताकि आम जनता मुफ्त में सीखने की सामग्री के माध्यम से अपनी गतिविधियों से लाभान्वित हो सके और वक्ता के साथ सीधे परामर्श करे अपने दैनिक जीवन में अल-क़्रआन के अभ्यास और समझ के बारे में। केंद्र का कोई राजनीतिक या सांप्रदायिक संबद्धता नहीं है और यह केवल एक धर्मार्थ आधार पर फि-सबील अल्लाह चलाया जा रहा है। हम सभी मुसलमानों से अल्लाह/भगवान के लिए हमारे साथ हाथ मिलाने का अनुरोध करते हैं और दावाह के हमारे मिशन को समर्थन करने का अनुरोध करते हैं (यानी दुनिया की जनता के

लिए अल-इस्लाम का निमंत्रण देने के लिए)

अल- कुरआन से हमारा सिद्धांत

याद करो जब अल्लाह/भगवान
ने उन लोगों से, जिन्हें किताब
प्रदान की गई थी, वचन लिया
था कि उसे लोगों के सामने
भली-भाँति स्पष्ट करोगे उसे
छिपाओगे नहीं।" किन्तु उन्होंने
उसे पीठ पीछे डाल दिया और
थोड़ी कीमत पर उसका सौदा
किया कितना बुरा सौदा है
जो ये कर रहे है!

आल-ए-इमरान 3:187

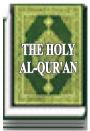


पढ!

अपने रब/भगवान के नाम के साथ अल-कुरआन अल्लाह/भगवान की किताब

अल-कुरान से 6237 में से सिर्फ दो आयतें।

और हमने क्रआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज बना दिया है। फिर क्या है कोई नसीहत करनेवाला?



54:17

क्या वे कुरआन में सोच-विचार नहीं करते? यदि यह अल्लाह/भगवान के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता. तो निश्चय ही वे इसमें बह्त-सी बेमेल बातें पाते। 4:82

- *मानवता की घोषणा
- *दया और ब्द्धि का झरना।
- *लापरवाह के लिए एक चेतावनी।
- *भटके हुए के लिए एक मार्गदर्शक।
- *संदिग्ध के लिए एक आश्वासन।
- *कष्ट के लिए एक धीरज।
- *निराश लोगों के लिए एक आशा।

उम्म/माँ की प्रशंसा

- 1.माँ का अपने बच्चों के साथ बहुत अहम/महत्वपूर्ण और विशेष/प्रधान संबंध होता है जिससे यह प्रकट होता है कि किस तरह वह अपने बच्चों का पैदाइश/जन्म के बाद से उनकी परविरेश/पालन पोषण भूख और प्यास का ध्यान रखती है।
- 2.किस तरह उन बच्चों की शिक्षा-दीक्षा की विभिन्न स्थितियों में उनको नियंत्रण करती है और अपनी ममता के अधिकार का उपयोग करते हुए उन पर भावनात्मक और बौद्धिक समझ की क्षमता से प्रभावित होती है जिसके कारण से बच्चा अपनी माँ से मज़बूती से जुड़ा हुआ होता है।
- 3.हर माँ की दृष्टि में अपने बच्चों का संरक्षण
 और देख-रेख बहुत महत्त्व रखती है। इन सब
 विशेषताओं के कारण से हर बच्चे का अपनी माँ से बहुत
 गहरा भावनात्मक संबंध होता है जो पूरे जीवन स्थापित
 रहता है।

आल-ए-इमरान 3

7.वह ही है जिसने तुझ पर किताब अवतरित की उसमें से मुहकुमात/हुकुम वाली आयात/ निशानियाँ हैं। वह किताब की माँ हैं और दूसरी मुताशाबिहात/ मिलती जुलती (आयात/ निशानियाँ) हैं। बस जिन लोगों के दिलों में टेढ़ है वह पालन करते हैं जो उससे मुताशाबा/ मिलता जुलता है फ़ितना/ वशीकरण ढूढ़ते हैं और उसकी तावील/व्याख्या ढूढ़ते हैं। और सिवाय अल्लाह/भगवान के उसकी व्याख्या कोई नहीं जानता। और इल्म/ज्ञान में जो स्थिर हैं वह कहते हैं हम इसके साथ र्डमान/विश्वास लाए सब हमारे रब/पालनेवाले के पास से है। और दानिशमंदों/मेधावी/जिनके पास मूल है (किसी भी चीज़ का अंतरतम भाग) के सिवाय कोई नहीं याद रख सकता।

مِنْهُ إِلَيْ تَحْكُمُ لَمْتُ هُنَّ أُمُّ الْكِتٰبِ وَأُخَرُ مُتَشٰبِهِكُ ۗ <u>ۼ</u>ؘٲڡۜٵڷڶڔ۬ؽ۬ۏڨڰٷڔؚۿ۪؞ؗۯؽۼؖ فَيُتِّبِعُونَ مَاتَشَابِهُ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتُنَةِ وَابْتِغَاءَ كَأُويُلِةٌ وَمَا يُعُكُمُ تِنَاوِيْكُةَ إِلَّا اللَّهُ والرسخون فيالعلم يقۇلۇن|متابة كُلُّ مِّنُ عِنْدِرَتِنَاة ۅؘڡٵؽڹٞڰٷٳڰٵٛۅڶٷٳٵڷۘۘۘػڶؠٵ[ۣ]

هُوالَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ

अल-माइदा 5

43.और वह कैसे तुझे हुकुम/आदेश देंगे और उनके पास तौरात/ क़ानून है उसमें अल्लाह/ भगवान के हुकुम/आदेश है। फिर उसके बाद वह पलट जाते हैं और वह मोमिनों/विश्वासियों के साथ नहीं हैं।

अज़-ज़ुखरुफ़ 43

2.सौगंध है स्पष्ट किताब की।

ٱلزُّخُرُفِ ٢٢

وَالْكِتْبِ الْمُبِيْنِ أَنْ

3.निश्चित ही हमने उसको अरबी कुरआन/पढ़ाई बनाया ताकि त्म अक्ल/बुद्धि से काम लो।

ٳٮٞٵۜۘۜۜۜۼۘۼڶڹۮؙڨؙۯٷۨٵۘۜۜۜڠڒؠؾؖٳ ڷؙۘۘۼڵۜڪؙ؞ٟ۫ؾػ۬ڡؚٙڷٷٛؽؙ۞ۧ

4.और निश्चित ही वह उम्मुल किताब/किताब की माँ में है हमारे पास से आला/उच्च और हिकमत/बुद्धिमत्ता वाली है।

ۅؘٳٮٞٷڣؘٛٲؙڡؚٞٳڶڮؿ۬ۛۛڮ ڶۘۘػؽؙڹٵڵۘۘۘٷڸڰٞڂڮؽڲ۠ڽ۠

अर-रअद 13

39.अल्लाह/भगवान जो चाहता है
मिटाता है और जो चाहता है
स्थापित रखता है और उसके
निकट उम्मुलिकताब/किताब
की माँ है।

اَلْتَغِدِ ١٣

يَمْحُوااللهُ مَايَشَاءُ وَيُثْبِتُ ﴾ وَعِنْدَ لَا أُمِّرُ الْكِتْبِ ﴿

16.और किताब में मरयम को याद/स्मरण कर जब उसने अपने अहल/परिवार से शरकी/ पूर्व स्थान पर अलग हुयी।

هُرُ لَيْهِرَ ١٩

ۅؙٳۮ۬ٷٛڣٳڷڮؿ۬ڮؘۘۘڡؙۯڮڡؙۯ ٳڿٳڹٛؾۘڹؙؙۘۘػؘٛ ڡؚڹٛٳۿڸۿٵڡڰٵڽٵۺۯۊؾؖٳڽؖ

आल-ए-इमरान 3

45.जब फ़रिश्तों/देवदूतों ने कहा ऐ मरयम निश्चित ही अल्लाह/
भगवान तुझको अपने पास से कलमा के साथ बशारत/शुभ सूचना देता है। उसका नाम अल मसीह ईसा इब्ने मरयम होगा, इस दुनिया में और अंत में वह वजीहा/सुप्रसिद्ध होगा और कुर्ब/समीपता रखने वालों में से होगा।

ال عِمْرِنَ ٣

إِذْقَالَتِ الْمُلَاكِمَةُ يُمرُيُمُ إِنَّ اللَّهُ يُبَرِّبِّ مُكِ رِكَامِةٍ مِنْهُ هُ اسْمُهُ الْمُسِنْ عُ عِيْسَى ابْنُ مَنْ يَهَ وَجِهُمَّا فِي اللَّهُ نَيَا وَالْأَخِرَةِ وَمِنَ الْهُقَرِّبِيْنَ فَيْ

मरयम 19

17.बस उसने उनके अलावा हिजाब/
परदा किया बस हमने उसकी
तरफ़ अपनी रूह/सार/सारांश
भेजी बस वह ठीक-ठाक उसके
लिए बशर/व्यक्ति का उदाहरण
थी।

مَرْكِيمَ ١٩

ڬٲڠٞؾؙۯٮٛٞڡؚڹٛۮٷڹۿؚٟ؞ٝڿؚٵۘٵ ڬٲۯ۫ڛڵڹٵٙٳڵؽۿٵۯٷڂڹٵ ڡٛؿۜؽؿۜڶڵۿٵڹۺؙڴٳڛۅؾؖٳڛ

18.3स (यानी मरयम) ने कहा निश्चित ही मैं तुझसे अपने रब/पालनेवाले की शरण चाहती हूँ अगर तू परहेज़गार है।

19.3सने कहा निश्चित ही मैं तेरे रब/पालनेवाले का रसूल/ सन्देशवाहक हूँ। ताकि तुझे एक न्यायोचित किया हुआ लडका प्रदान करूँ।

20.3स (अर्थात मरयम) ने कहा
मेरे यहाँ लड़का क्यूंकर होगा
जबिक मुझे किसी बशर/व्यक्ति
ने छुआ तक नहीं। और ना
ही मैं बदकार/व्यभिचारी हैं।

21.उसने कहा ऐसा ही होगा तेरे रब/पालनेवाले ने कहा कि ये मुझ पर सरल है, और ताकि हम उस (अर्थात ईसा) को लोगों के लिए एक निशानी और अपने पास से रहमत/ कृपा बना दें और ये आदेश पूरा हुआ।

22.बस उस (मरयम) ने उसको उठा लिया और उसके साथ एक दूर मकाम/स्थान पर चली गई।

مُرُكِيمَ ١٩

قَالَتْ إِنِّهُ ٱعُوْذُ بِالرَّصْنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ₪

> قَالَ إِنَّهَاۤ ٱنَارَسُوۡلُ رُبِّاكِ ۗ لِرَهَبَ لَكِ عُلمًا زَرِيًّا ۞

قَالَتَ الْيُ يَكُوُّنُ لِىٰ غُلْمٌ وَّلَمْ يِنْسَسُنِيۡ بَشُرُّ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ۞

قَالَكُنْ لِكِ قَالَ رُبُّكِ هُوعَكَّ هَيِّنُ ۚ وَلِجُعَلَكَ ايُةً لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا وَكَانَ اَمْرًا مِّ قَضِيًّا ۞

ڡؙؙٛٛڲۿۘػؽؙ ؘڡؙٲڹ۫ؿۘۘڹؽؙٮٛ۫ڽؠؚ؋ڡۘػٲڹٞٵڨڝؚؾؖٵ۫۫۫ٙ

23.बस (पैदाइश का) दर्द उसको एक खजूर के पेड़ के तने तक ले आया। उसने कहा ऐ काश कि मैं इससे पहले ही मर गई होती। और भूली हुई हो गई होती।

مُحرُّ لَيْحَ ١٩

فَاجَآءُهَاالْمُخَاصُ إلى جِذُعِ النَّخُلَةِ قَالَتُ يَلَيُتَنِي مِثُ قَبْلَ لَهٰ ذَا وَكُنْتُ نَنْيًا تَنْسِيًّا ۞

24.और उस (अर्थात रूह/सार/सारांश) ने उसे उसके नीचे से पुकारा। कि तू दुखी ना हो। वास्तव में तेरे रब/पालनेवाले ने तेरे नीचे सरैय्या/अवलम्बित गुज़र बसर बना दिया।

فَنَادْهَامِنْ تَحْتِهَا َ ٱلاَتَحْزَنِيْ قَلْجَعَلَرَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًا ۞

अल-फ़जर 89

4.और रात्रि की सौगंध जब कि वह बीतने के समीप हो।

أَلْفَجُرِ ٨٩

وَالْيُلِ إِذَا يَسْرِثَ

अल-बक्ररा 2

253.वह रसूल/संदेशवाहक हैं जिनमें हमने कुछ को कुछ पर फज़ीलत/ श्रेष्ठता दी । उनमें से वह जिन से अल्लाह/भगवान ने कलाम/ बातचीत की। और उन में से कछ की पदवी को रफअ/ बुलंद किया। और मरयम के बेटे ईसा को हमने स्पष्ट निशानियाँ दीं, और हमने उसकी मदद रुह्लक्द्दुस/पवित्र रूह/सार/सारांश से की, और यदि अल्लाह/भगवान चाहता तो उनके बाद आने वाले (आपस में) ना लड़ते, पश्चात उसके की उनके पास स्पष्ट निशानियाँ आ चुकी थीं, लेकिन उन्होंने इख़ितलाफ़/मतभेद किया, बस उनमें ऐसे भी हैं जो ईमान/ विश्वास लाए, और उनमें ऐसे भी हैं जिन्होंने इनकार किया, और यदि अल्लाह/भगवान चाहता तो वे न लड़ते, लेकिन जो अल्लाह/भगवान चाहता है वही करता है।

اَلْبَقَرَة ٢

آءُ اللهُ مَا اقْتَتَكُ الَّذِينَ

25.और खजूर के दरख़्त के तने को पकड़ कर अपनी ओर हिला। तुझ पर ताज़ा पकी हुई खजूरें गिरेगीं।

26.बस खा (अर्थात पकी हुईं खजूरें)
और पी (अर्थात चश्मे/झरने से)
और अपनी आँखों को ठंडा कर
और फिर यदि तू किसी भी
बशर/व्यक्ति को देखे बस तू कह
कि मैं रहमान/कृपावान के लिए
उपवास/व्रत वक्फ़/अर्पित करती
हूं। बस आज मैं किसी इंसान से
कदापि बातचीत नहीं करूँगी।

مُرُكِيمَ ١٩

ۅ*ۿڔٚؽٙٳڶؽڮ*ۭڿ۪ۮ۬؏ٳڵۼۜ۬ڬڷۊ ؿؙڶڡؚڟؘۘػڶؽڮؚۯؙڟٵٜڿڹؚؾؖٳ۞

ڡٞڰؙڸٛٷٳۺٛڔؽؚٷۊٙڗؽۘۘۼؽؗٮ۠ٵٞ ڣٳڡۜٵٮۯؠۣڗۜڡؚڹؘٳڷۺۘڔٳۘۘۘڪڰٳ[؇] ڡؘڡؙٷڷۣٳڹٚ ڹڬۯٮؙؙڸڒڿڶڹڞڮۏڡٵ ڡؘڬڹٛٲڰڵؚۄؙڵؽٷؘ؋ٳڹڛ۫ؾٵ۞ۧ

आल-ए-इमरान 3

45.जब फ़रिश्तों/देवदूतों ने कहा ऐ मरयम निश्चित ही अल्लाह/
भगवान तुझको अपने पास से कलमा के साथ बशारत/शुभ सूचना देता है। उसका नाम अल मसीह ईसा इब्ने मरयम होगा, इस दुनिया में और अंत में वह वजीहा/सुप्रसिद्ध होगा और कुर्ब/समीपता रखने वालों में से होगा।

46.वह लोगों से गहवारे/पालने में और अधेड़ उम्र में कलाम/बात करेगा और वह सही करने वालों में से होगा।

47.3सने कहा ऐ मेरे रब/पालने वाले यह कि मेरे लिए कैसे बेटा होगा। और कदापि मुझे बशर/व्यक्ति ने नहीं छुआ। कहा इसी तरह अल्लाह/भगवान जो चाहता है तख़्लीक़/निर्माण करता है। जब आदेश पूरा कर देता है बस वह उसके लिए कहता है हो जा और वह हो गया।

48.और वह (अल्लाह/भगवान)

3स (ईसा) को किताब/लिखाई
का और हिकमत/अक्लमंदी/
तत्वदर्शिता का और तौरात/
क़ानून का और इन्जील/शुभ
संदेशों का ज्ञान देगा।

मरयम 19

30.कहा निश्चित ही मैं अल्लाह/ भगवान का नौकर/बन्दा हूं मुझे किताब दी गई और मुझे नबी/भविष्यवक्ता बनाया गया।

ال عِهٰزِنَ ٢

اِذْقَالَتِ الْمُلَلَّكُةُ لِمُرْيَّمُ إِنَّ اللَّهُ يُبَيِّرِّمُكِ بِكَامَةٍ مِّنْهُ هُ اللَّهُ الْمُسِنِّحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَهَ وَحِيْهُ الْمُنَا اللَّهُ نَيَا وَالْاَحِرَةِ وَمِنَ الْهُقَرِّيِيْنَ ۞

ٷؽؙڴؚؠؙؙؙؙؙؙٞٞ۠۠ٳڶێؘٲڛڣۣٳڶؠٙۿؙۑۘٷۘػۿڵؖڒ ٷٙڝڹٳڶۻڶؚڿؽڹ۞

قالتُ رَبِّ اَلَٰى يَكُونُ لِى وَلَكَّ وَلَهُ يَمُسَسُّنِى بَشَرُّ قالكُنْ لِكِ اللهُ يَخْ لُقُ مَا يَشَاءُ ۖ إذا قَطَى أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيكُونُ ⊛

> ٷؙۘڲؙڲؚڹؠؙٞۿؙٲڶڮؾ۬ۘڹۘۉٳڵڿڬؙٛؖۻڎٙ ٷاڵٮٞٷؙڒٮڎؘٷٲڵٟڿؚٝؽؙڶ۞ٝ

هُوُ لَيْهِرَ ١٩

ۘۊؘٳڶٳڔٚڹٚۘٛٞۘۼڹۘۮٳڛ۠ۊؚؖ^ڟ ٚٳؿ۬ڹؽٳؽڔڐؼڐؼۅڮۼڮ؈ؘٛڹڽۜٳؖڂ

अल-आराफ़ 7

157.वे लोग जो रसूल/संदेशवाहक, नबी/भविष्यवक्ता, उम्मी/माँ वाले नबी/भविष्यवक्ता का पालन करते हैं, जिसको वे अपने पास तौरात/क़ानुन और इंजील/खुशखबरी में लिखा हुआ पाते हैं। वह उन सब को आदेश करता है मारूफ/जाने पहचाने के साथ और उन सब को रोकता है मुनकर/बेहरूप के बारे में, और वह उन सब के लिए हलाल/वैध करता है तय्यिबात/अच्छी चीजों को, और वह उन सब पर हराम/ निषिदध करता है ख़बाइस/बुरी चीजों को, और वह उतारता है उनके बोझ और हथकडी को जो उनके ऊपर थे। बस वे लोग उसके साथ ईमान/विश्वास लाए और तुम उसके दंड विधानों को मानो और उसकी सहायता करो और उन्होंने नुर/ प्रकाश का पालन किया जो उसके साथ अवतरित किया गया। वही हैं जो सफलता पाने वाले हैं।

ٱلْاِعُولِفِ ٧

अल-अनआम 6

146.और यह्दियों/सहिष्णुओं पर हमने हर नाखून वाला जानवर हराम/निषिद्ध कर दिया, और गाय और बकरी उन दोनों की चर्बी हमने उन पर हराम/निषिद्ध कर दी, सिवाय उस (चर्बी) के जो उन दोनों के पीठ या एड़ियों पर है, या जो (चर्बी) हड्डियों से मिली हुई है। यह सज़ा हमने उनको उनके विद्रोह के कारण दिया। और निश्चित ही हम अवश्य सच्चे हैं।

ٱلْأَنْعَامِر ٢

وَعِلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمُنَاكُلَّ ذِی طُفْرِ وَمِنَ الْبَقَرِوَالْغَنَمِ حَرَّمُنَاعَلَیْهِ مُشْعُوْمَهُمَا الْامَاحَلَتُ ظُهُوْرُهُمَا اَوالْحُوالِيَّا اَوْمَااخْتَلَطَ بِعَظْرِ اللَّهِ جَزَيْنَهُ مُ بِبُغْيِهِ مُوْكَ وَإِنَّالَصْهِ قَوْنَ ﴿

अन-निसा 4

160.बस यह्दियों/सहिष्णुओं के
अत्याचार के कारण और उनके
बहुत से लोगों को अल्लाह/भगवान
के मार्ग से रोकने के कारण वह
पाकीज़ा/पवित्र चीज़ें जो उन पर
हलाल/वैध थी हमने उन पर
हराम/निषिद्ध कर दीं।

اَلَٰذِسُكَاءُ عَ

فَيُظُلُوم مِّنَ الَّذِينَ هَادُوُا حَرَّمُنَاعَلَيْهِمُ طَيِّبَتٍ اُحِلَّتُ لَهُمُورِصِلِّهُمُّ عَنْسَبِيْلِ اللهِ كَثِيرًا ﴿ عَنْسَبِيْلِ اللهِ كَثِيرًا ﴿

अन-नहल 16

118.और वे जो यहूदी/सहिष्णु हैं
हमने उन पर वही कुछ हराम/
निषिद्ध किया है जिनका हमने
पहले से तेरे ऊपर संबंध कर
रखा है। और हमने तो उन पर
अत्याचार नहीं किया बल्कि
उन्होंने स्वयं ही अपने नफ़्सों/
मनोभाव पर अत्याचार किया।

ٱلنِّحُيْلِ ١٦

وعلى الَّذِيْنَ هَادُوْ احَرِّمْنَا مَاقَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبُلُّ وَمَاظَلَمُنْهُمْ وَلَكِنْ كَانُوْ ا اَنْفُسُهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿

आल-ए-इमरान 3

93.हर खाना बनी इसराइल के बेटों के लिए हलाल था सिवाय जो इसराइल ने तौरात/क़ानून अवतरित होने से पहले अपनी नफ़्स/मनोभाव पर हराम/ निषिद्ध किया था। कह दे बस आओ तौरात/क़ानून के साथ बस उसकी तिलावत/पाठ करो अगर तुम सच्चे हो।

ال عِمْرِنَ ٢

ڪُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلَّا لِبَنِیَ اِسُرَاءِیْلَ الاَّمَاحَدُمُ اِسُرَاءِیْلُ عَلَی نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَوِّلُ التَّوْلِیةُ فُلْ فَانْوُا بِالتَّوْلِیةِ فَاتُلُوْهِاَ اِنْ کُنْنَهُ رُضِدِ قِیْنَ ﴿

आल-ए-इमरान 3

50.और (मैं ईसा) पुष्टि करने वाला हूँ उसकी जो मेरे दोनों हाथों के बीच/सामने है तौरात/ क़ानून से, और मैं हलाल/वैध करता हूँ तुम्हारे लिए कुछ वह जो हराम/निषिद्ध किया गया तुम सब पर, और मैं आया तुम सबके पास तुम्हारे रब/ पालनेवाले की आयत/निशानी के साथ। बस तुम सब अल्लाह/ भगवान का परहेज़ करो और मेरा अनुसरण करो।

ال عِمْرِنَ ٣

وَمُصَرِّ قَالِمَا بَيْنَ يَدَى مِنَ التَّوْرِيةِ وَلِمُحِلَّ لَكُمْ بَغْضَ الَّذِي حُرِّمُ عَلَيْكُمُ وَحِثْنُكُمْ بِاليَّةِ مِّنُ رَبِّكُمُّ فَاتَّقُوا اللَّهُ وَلَطِيْعُونِ ۞

अल-आराफ़ 7

158.कह दे ऐ लोगों निश्चित ही मैं तुम सबकी ओर अल्लाह/ भगवान का रसूल/संदेशवाहक हँ, वह (अल्लाह/भगवान) जिसके लिए आकाशों और धरती की बादशाही है। नहीं है कोई इलाह/भगवान सिवाय उसके। वह जीवन और मृत्य् देता है। बस ईमान/विश्वास लाओ अल्लाह/भगवान और उसके रसूल/संदेशवाहक, उम्मी/ माँ वाले नबी/भविष्यवक्ता के साथ वह जो अल्लाह/भगवान और उसके कलिमात/शब्दों के साथ विश्वास रखता है, और तुम सब उस (नबी/भविष्यवक्ता) का पालन करो संभवतः कि 13 तम मार्गदर्शन पाओ।

الْأَعُولِفِ ٧

قُلْ يَائِهُ النَّاسُ إِنِّى رَسُولُ اللهِ النَّكُمُ جَمِيْعاْ اِلَّذِى لَهُ مُلْكُ اللهِ النَّكُمُ جَمِيْعاْ الْالْهَ الْاهُ وَيُجِي وَيُمِيْتُ فَامِنُوا بِاللهِ وَرَسُولِهِ النَّبِي الْالْمِقِ النَّذِى يُوْمِنُ بِاللهِ وَكِلِمْتِهِ النَّذِى يُوْمِنُ بِاللهِ وَكِلِمْتِهِ وَاتَّبِعُوْهُ لَكُنَّكُمُ تَهُ تَكُونُ وَنَ

अल-माइदा 5

116.और जब अल्लाह/भगवान ने कहा ऐ मरयम के बेटे ईसा क्या तूने लोगों से कहा था कि अल्लाह/भगवान के अतिरिक्त मझको और मेरी माँ को दो डलाह/भगवान पकडो। उसने कहा तु पवित्र है मेरे लिए नहीं था कि मैं यह कहता जो कदापि मेरे लिए हक के साथ नहीं था अगर मैं यह कहने वाला होता बस वास्तव में त् उस का ज्ञान अवश्य रखता। जो मेरे नफ्स/मनोभाव में है तु ज्ञान रखता है और जो तेरे नफ्स/मनोभाव में है मैं ज्ञान नहीं रखता। निश्चित ही तू गैबों/अन्पस्थितियों का ज्ञान रखने वाला है।

اَلْمَائِلُةِ ٥

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ وَأُمِّي الْهَيْنِ مِنْ دُونِ اللَّهِ قال سُبْخِنك مَايِكُونُ لِيَ ولا أعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكُ إنَّكَ أَنْتَ عَلَّا مُالْغُيُّونُ

अल-बक्ररा 2

129.(इबराहीम और इसमाइल ने कहा) ऐ हमारे रब/पालनेवाले उनमें एक रस्ल/संदेशवाहक उन्हीं में से नियुक्त कर दे जो उन पर तेरी आयात/ निशानियों का पाठ करे और उन्हें किताब और हिकमत/ बुद्धिमता का ज्ञान दे और वह उनको न्यायोचित करे। निश्चित ही तू ज़बरदस्त, हिकमत वाला/बुद्धिमान है।

अल-इसरा 17

85.और वह तुझसे रूह/सार/सारांश के बारे में प्रश्न करते हैं। कह दे कि रूह/सार/सारांश मेरे रब/पालनेवाले के आदेश से है। और तुम्हें ज्ञान नहीं दिया गया सिवाय थोड़ा।

अल-वाक्या 56

79.उस को नहीं छू सकते सिवाय जो म्ताहिर/श्द्ध हैं।

اَلۡبَقَرَةِ ٢

ڒۺۜٵۘۉٳڹۘۼٮڬٛۏؽۿؚؠؙ ڒڛۢۉڰٳڝٚڹٛۿؙؠٛ ؽؾؙڵٷٳۼڵؽۿؚؠٛٵڸؾڮ ٷؿػؚڵؠۿؙؠؙٛٳڶڪؚؿڹٷٲؙڮؚڬؠڎؘ ٷؿڒڒۜێۿؚؠؙٛ ٳؾۜڮٲڹٛؿٵڵۼڒؚؽ۫ڒٳػڮؽؽؙۯ۫۫

اَلْاِسْزاءِ ١٧

ۉۘؽؽؘۘٸڵٷؘؽڬٛۼڹۘٳڵڗؖٷڿ ڠؙڸٳڵڗٷٛڂڝڹٛٳۻٛڔۮؚڮٚ ۅڡۜٵٷٛؾؽؿٛۯۺۜڹٲڵڿڶؠ ٳڵۮٷڸؽڵڰؚۘؗؗ

اَلْوَاقِعَةِ ٥٠

وكيكسك إلا المُظَهِّرُوْنَ 🕾

अल-जुमा 62

2.उसी ने उम्मियों/माँ वालों में उनमें से रसूल/संदेशवाहक नियक्त किया है वह उन पर उसकी आयात/निशानियाँ पाठ करता है और उनको न्यायोचिता करता है, और उन सबको किताब और हिकमत/बुद्धिमत्ता का इल्म/ ज्ञान देता है, और इससे पहले वे अवश्य स्पष्ट पथभ्रष्टता में थे। 3.और उनमें से दूसरे लोग जो उनके साथ मिले नहीं हैं (रसूल/संदेशवाहक नियुक्त करता है)। और वह ज़बरदस्त, हिकमत वाला/तत्वदर्शी है।

الجبعة ١٢

ۿؙۅٳڷڹؽؙؠۘۼۘڎڣٳڶٛۮؙؚۊؠۜڹ ۯڛؙۅٛڒڴۊؠ۬ٛؠؙۮؠؿۘڷٷ۠ٳۼڮڣۿٳڸؾؠ ٷؽ۠ڒڲؿۿؚؠؙٛۅؠؙٛۼڵؠۿؠ۠ٛٵڶڮۺ۬ۘٵۅٳؙٛڮؚڬٛؠڎؘ ۅٳڹٛڰٵٮٷٳڡڹٛۊۻ ڹۼؽؙۻڵڸؚۺؙڽؽڹ۞ٞ

> وَّاخَرِيْنَ مِنْهُمُّ لَمَّايَلُحَقُوْا بِهِمْ وَهُوَالْعَزِيْزُالِحُكِيْمُ

अल-बक़रा 2

151.जैसे हमने तुममें रसूल/
संदेशवाहक भेजा तुमही में
(यानी नफ़्सयात/मनोभाव) से
जो तुम पर हमारी आयात/
निशानियाँ पाठ करता है और
वह तुम्हें तज़िकया/
न्यायोचिता करता है और वह
तुम्हें किताब और हिकमत/
तत्वदर्शिता का इल्म/ज्ञान
देता है जो तुम कदािप नहीं
जानते थे।

ٱلۡبَقَرَةِ ٢

كَمَا ٱزْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلِامِنْكُمْ يَتْلُوْاعَلَيْكُمُ الْيَبْنَاوَيُزَرِّكِيُكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتْبَ وَالْحِكْمُةَ وَيُعَلِّمُكُمُ مِّالَكُمْ تَكُوُّنُوْا تَعْلَمُوْ

<u>आल-ए-इमरान</u> 3

164.वास्तव में अल्लाह/भगवान ने ईमानवालों/विश्वासियों पर उपकार किया जब उसने उनमें उन्हीं के नफ़्सों/मनोभाव से रसूल/संदेशवाहक नियुक्त किया वह उन पर उस (अल्लाह/भगवान) की आयात/निशानियों का पाठ करता है और वह उनको न्यायोचिता करता है और वह उनको किताब और हिकमत/तत्वदर्शिता का इल्म/ज्ञान देता है। और उससे पहले वे (अर्थात ईमान/ विश्वास वाले) अवश्य स्पष्ट पथभ्रष्टता में थे।

79.किसी बशर/व्यक्ति के लिए
नहीं है कि अल्लाह/भगवान
उसे किताब और हुक्म/शासन
और नबुव्वत/भविष्यवक्तता
दे फिर वह लोगों के लिए
कहे अल्लाह/भगवान के
अतिरिक्त मेरे बंदे/नौकर
बन जाओ लेकिन रब वाले
हो जाओ उसके साथ जो
तुम हुए किताब का ज्ञान
देने वाले और उसके साथ
जो तुम हुए दरस/शिक्षण
लेने वाले।

ال عِمْزِنَ ٣

كَقُكُمْنَ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ إِذْبَعَتَ فِيهُمْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ إِذْبَعَتَ فِيهُمُ رَسُولًا مِّنَ اَنْفُسِهِمُ يَتُكُوْا عَلَيْهِمُ الْمَاتِ وَالْحِكْمُةَ عَلَيْهُمُ الْمَاتِ وَالْحِكْمُةَ عَلَى الْمُنْ الْمَاتُ وَالْحِكْمُةَ عَلَى اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّ

مَاكَانَ لِبُشُرِانَ يُّوْتِكُ اللهُ الْكِتْبُ وَالْحُكْمُ وَالنُّبُوَّةَ تُمَّيَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِنَّ مِنْ دُوْنِ اللهِ وَلَكِنَ كُوْنُوْ أَرَاثِنِيِّنَ بِمَا كُنْتُوْتُكُولُونَ الْكِتْبُ وَبِمَا كُنْتُوْتُكُولُونُونَ فَيْ

अल-अनआम 6

19.कह दे कौन सी चीज अधिक बड़ी गवाही है, कह दे अल्लाह/ भगवान गवाह है मेरे और तम्हारे बीच। और मेरी ओर र्ये कुरआन/पढ़ाई वहयी/प्रेरित की गयी है इसलिए कि मैं तुम्हें इसके साथ सचेत करूँ और जो कोई प्रचार करे। क्या तम गवाही देते हो कि अल्लाह/ भगवान के साथ कोई दसरे इलाह/भगवान हैं? कह दें मैं गवाही नहीं देता। कह दे निश्चित ही वह एक डलाह/ भगवान है और निश्चित ही मैं बरी/मुक्त हँ उससे जो तुम शिर्क़/सहभागिता करते हो । (अर्थात अल्लाह/भगवान के साथ दसरों को सहभागी करना।)

अश-शूरा 42

7.और इसी तरह हमने तेरी ओर अरबी कुरआन/पढ़ाई वहयी/प्रेरित की तािक तू शहरों की माँ को सचेत करे और जो उसके माहौल/परिवेश में हैं और तू जमा/संकलन होने वाले दिन से सचेत करे जिसमें कोई शक़ नहीं है। एक फ़रीक़/दल स्वर्ग/ बाग़ में होगा और एक फ़रीक़/दल भड़कती हुई आग में होगा।

الكانعامي

اَلشَّوْرِي ٤٢

وُكُنْ الْكَ اَوْحَيْنَا الْيَكَ قُرُانًا عَرَبِيًّا لِتُنْذِرا مُمَّ الْقُرٰى وَمُنْ ذِريُومَ الْجَمْعِ وَيُنْ ذِريُومَ الْجَمْعِ وَيُورِيَّ فِي السَّعِيْرِ وَفَرِيْقُ فِي السَّعِيْرِ

अल-अनआम 6

92.और यह अभिवृद्धि/संवृद्धि वाली किताब है जिसको हमने अवतरित किया पुष्टि करने वाली जो उनके सामने है ताकि तू सचेत करे उम्मुल कुरा/शहरों की माँ/मक्का वालों को और (इन बस्तियों) में जो (उम्म) के माहौल/परिवेश में हैं। और वे लोग जो अंत के साथ विश्वास लाते हैं, वे ईमान/विश्वास लाते हैं उसके साथ और वे अपनी सलात/ नमाज़ का संरक्षण करने वाले हैं।

لأنعام ه

وَهِٰنَاكِتُبُانُزُلْكُ مُبْرِكٌ مُّصُدِّ قُ الَّذِیۡ بَیۡنَیکُیٰهِ وَلِتُنۡذِیۡ اُمَّالِقُرٰی وَمَنْ حُوٰلَهُا وَالَّذِیۡنَیُوۡمِنُوۡنَ بِالْاَحِرَةِ وَالْکِذِیۡنَ یُوۡمِنُوۡنَ بِهٖ وَهُمۡعَلٰی یُوۡمِنُوۡنَ بِهٖ وَهُمۡعَلٰی صَلاتِهِمُ یُحَافِظُوۡنَ ﴿

अल-बक्ररा 2

78.और उम्मियो/माँ वालों में से ऐसे हैं जो किताब का इल्म/ जान नहीं रखते सिवाय अपनी कामनाओं के। और वह कल्पना करते हैं।

ٱلبُقَرَةِ ٢

ۉڡڹ۬ؠؙؙٛۿٳؙۻؾ۠ۏڹڵٳؽۼۘۘۘڵؠۄؙۏؘ ٵڶڮؾؙۘٵٳڷۜۜؖؗٳٵڶڹۜ ۅٳڹ۫ۿؙؿٳڵٳڮؽؙڟڹٷڹٙ

79.बस अफ़सोस/खेद है उन लोगों के लिए जो अपने हाथों के साथ किताब लिखते हैं (यानी अपनी भाषाओं में सही अर्थ और रुह/सार/सारांश की प्रतिनिधित्व नहीं करते) फिर वह कहते हैं यह अल्लाह/भगवान के पास से है तािक वह उसे थोड़े मूल्य के साथ ख़रीद लें। बस अफ़सोस/खेद है उनके लिए उसमें से जो उनके हाथों ने लिखा और अफ़सोस/खेद है उनके लिए उसमें से जो उन्होंने कमाया।

ٷؽؙۣڷٵؚڷؚڶڹؗؾؙ ڮڬٮؙٛٷ۬ڹٲڶڮڗ۬ۘڹڔٲؽڔؽۿؚٷٝ ڎؙڴؽڡٞٷٷڹۿڶٳڡڹ؏ڹ۫ڔٳۺڮ ڸؽؿؙۘؗؿۯٷٳڽؚ؋ۿؙٮؙٵڡٙڸؽڷڵ ٷؽڷڰۿٶٞڝؚؠٵػٮۘڹٮٛٵؽڔؽۿڡٛ ٷؽڷڰۿٶ۫ڝؠۜٵڮڛٛٷ۞

अल-क़सस 28

59.और तेरा रब/पालनेवाला
बस्तियों/शहरों को विनष्ट करने
वाला नहीं है यहाँ तक कि वह
उन (बस्तियों/शहरों) की उम्म/
माँ में रसूल/संदेशवाहक नियुक्त
नहीं करता, वह पाठ करता है
उन पर हमारी आयात/निशानियाँ,
और हम बस्तियों को विनष्ट
करने वाले नहीं हैं सिवाय उसके
परिवार वाले अत्याचारी हों।

अल-हाक्का 69

40.निश्चित ही यह अवश्य रसूले करीम/सम्मानित संदेशवाहक का कौल/कहा हुआ है।

अल-अनआम 6

65.कह दे वह उस पर क़ादिर/
नियंत्रक है यह कि तुम पर
सज़ा नियुक्त करे तुम्हारे ऊपर
से या तुम्हारे पैरों के नीचे से
या तुम्हें समूहों का लिबास/
वस्त्र पहनाकर। और कुछ
तुम्हारे कुछ के साथ वह
अभागापन का मज़ा चखाता
है। देखों हम कैसे आयात/
निशानियों की गिरदान/
आवश्यकतानुसार करते हैं
(अर्थात आयात/निशानियों को
नियमानुसार तौर से स्पष्ट
करना) संभवतः कि वह समझ
सकें।

ألْقَصَصِ ٢٨

وَمَاكَانَ رُبُّكُ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَقِّى يَبْعَثَ فِى أُمِّهَارُسُوْلًا يَّتُلُوْاعَلَيْهِمُ الْيِتِنَا وَمَاكُنَّامُهُلِى الْقُلْى الِاوَاهُ لُهُا ظِلِمُوْنَ ﴿

ٱلْحَاقَةِ ٦٩

ٳؾؙؖؗڰؙؙۘڵؘڡؙۜٛۅٝڷۯڛؙۘۅٝڸٟػڔؽؠؚؚؚؚؚؖۨٞ

اَلْاَنْعَامِر ٢

قُلْ هُوالْقَادِرُعَلَىٰ اَنْ يَّبُعَثُ عَلَيْكُمُ عَنَ الْبَامِّنْ فَوْقِكُمُ اوُمِنْ تَحُتِ اَرُجُلِكُمُ اوْ يُلْسِكُمُ شِيعًا وَيُذِيْقَ بَعْضَكُمُ بَاسَ بَعْضِ انْظُرُكِيْفَ نُصِرِّفُ الْأَيْتِ انْظُرُكِيْفَ نُصِرِّفُ الْآلِيْتِ لَعَالَهُمُ يَفْقَاهُونَ ۞

अज़-ज़ुख़रफ़ 43

36.और जो कोई ज़िक्र रहमान/
कृपावान के स्मरण से आंखें
बंद करेगा हम उसके लिए
(रसूल/संदेशवाहक) का तबादला/
विनिमय शैतान से कर देंगे
फिर वह उसके लिए जुड़ जायेगा।

اَلزُّخُرُفِ ٢٤

ٷڡؙؽٚؾۼۺۢۼڹ۫ۮؚؚڮٝٳڵڗۜڂۻڹ ٮؙٛڡٞؾؚۻٛڶڬۺؽڟڹٵ ڡؙۿؙۅڶڬڡٞڔؽ۬ڹ۠۞

37.और निश्चित ही वे उनको (अल्लाह/भगवान) के मार्ग से रोकते रहेंगे और वे हिसाब लगाते हैं कि वे मार्गदर्शित हैं।

ۅؘٳٮٞٚۿؙؗؗؗؗؗٛؗٛؗؗٞ؋ڬۿؙۯۼڹۣٳڵۺۜۑؽڸ ۅؘؿڂٛڛڹؙۏڹؘٳؘؾۿؙؽڗؖ۠ۿؙؾؙۮؙۏڹؘ۞

अल-क़सस 28

58.और हमने कितनी बस्तियों/ शहरों को विनष्ट कर दिया जो अपनी गुज़र-बसर के संसाधनों पर अकड़े, वह उनके सुख-चैन के स्थान जिनमें उनके पश्चात सिवाय थोड़ों के कोई नहीं ठहरा/रहा। और हम ही वारिसों/उत्तराधिकारियों में से हैं।

اُلْقَصَصِ ٢٨

وَّكُمْ اَهُلَكُنَامِنْ قَرْيُكَةً بَطِرَتْ مَعِنْشَتَهَا فَتِلْكُ مَسْكِنْهُمْ لَمُرْتُسْكُنْ فِتْنَ بَعْدِ هِمْ الْاَقْلِيْلَا وَكُنَّا نَحْنُ الْوْرِثِيْنَ ۚ

अल-कुसस 28

44.और तू पश्चिम की सतह के साथ नहीं था जब हमने मुसा की ओर आदेश पूरा किया और तू गवाहों में से नहीं था।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغُرُ إِ إذْ قَضَيْنَا ٓ إِلَى مُوْسَى الْأَمْرُ وَمَاكُنْتُ مِنَ الشِّيهِدِيْنَ ۞

46.और तू तूर/स्थिति (पहाड़) की सतह के साथ नहीं था जब रब/पालनेवाले से रहमत/कृपा है ताकि तू क़ौम/समुदाय को सचेत करे, नहीं आया उनके पास तुझसे पहले सचेत करने वाला. संभवतः कि वह सब नसीहत/स्मरण प्राप्त करें।

وَمَاكُنْتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إذْنَا دَنَنَا وَالْكِنُ رِّحْمَـُ قُصِّنُ رِّيْكَ हमने पुकारा और लेकिन तेर لِتُنْنِ رَقُومًا قَآا تُنْهُمُ مِّرِنَ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَالَهُمْ يَتَـٰنَ د

45.और हमने सदियाँ प्रारंभ कीं (अर्थात एक सदी सौ साल की होती है) बस तवील/लंबी हुई उन पर उम। और ना ही तु अहले मदयन/मदयन के परिवार में रहने वाला/निवासी था, तू उन सब पर हमारी आयात/निशानियां पाठ करता है और लेकिन हम ही (रसूलों/ संदेशवाहकों के) भेजने वाले हैं।

وَلِكِتَا ٱنْشَانَاقُرُوْنَا فتطاول عليهه والعبو وَمَاكُنُتُ ثَاوِيًا فِي ٓ اَهْلِ مَـٰكَ يَنَ تتُلُوُاعَلَيْهِمُ الْيِنَالُ ولكناً كُنَّامُ رُسِلِيْنَ ٠

अज़-ज़ुखरफ़ 43

31.और उन्होंने कहा कि यह
कुरआन/पढ़ाई दोनों बस्तियों/
शहरों (ताइफ़ व मक्का) के
किसी अज़ीम/बड़े पुरुष पर
क्यों अवतरित नहीं किया
गया?

आल-ए-इमरान 3

96.निश्चित ही मानवजाति के
लिए पहला घर जो उद्भव
किया गया बक्का के साथ है
अभिवृद्ध/संवृद्ध और मार्गदर्शन
है सारे संसारवालों/ब्रहमांडों के

अल-इसरा 17

1.पिवत्र है वह ज़ात जो अपने बन्दे/नौकर के साथ ले गया (अर्थात रूह/सार/संसार के साथ) रात में मस्जिद अल हराम से मस्जिद ए अक्सा/दूर वाली मस्जिद की ओर हमने उसके परिवेश को मंगलमय कर दिया ताकि हम उसको अपनी आयात/ निशानियों में से दिखाएं। निश्चित ही वह सुनने वाला, अंतर्दृष्टि रखने वाला है।

ٱلزُّخُرُفِ ٢٤

ۅؙۘۊٵٮٷؙڷٷڵٳٮؙۯؚٚڷۿؽٵٲڨؙٷؗڶ ۼڶؽڒڿؙڸ ڡ۪ٞڹٵۛڡٞٷؾۘؽڹٷۼڂؚؽۄؚۛ

ال عِمْرانَ ٢

ٳڬۜٳۊۜٙۘۘۘڮؠؽؾٟٷ۠ۻؚۼڸڵٵڛ ۘڵڵۜڹؚؽؠؚڹۘڴڎؘڞؙڶڒڴٳ ٷۿؙڴؽڷؚؚڶڂڶؠؽؙڹٛ۞ۧ

الدسراء ١٧

سُبُعُنَ الَّذِي َ اَسُرِٰى

يَعَبُٰونِهُ

لَيْكُومِّنَ الْسُنْجِوا كُحُرَامِ

الْمَالْسُنْجِوا الْأَقْصَا

الَّذِي الْمُنْجِوا الْأَقْصَا

الَّذِي الْمُنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمُنْطَا

अत-तौबा 9

107.और (म्नाफ़िक़/पाखंडी) लोगों ने उस (एक) मस्जिद को पकड़ रखा है न्क़सान/हानि और कुफ़/इनकार करने के लिए और मोमिनों/विश्वासियों के बीच फ़र्क़/भेद डालने के लिए और घात के लिए (अर्थात अचानक हमले के लिए गुप्त स्थान) उन (यहूद/सहिष्णु/ यहदियों) के लिए जो पहले से अल्लाह/भगवान और उसके रस्ल/संदेशवाहक से युद्ध करते आ रहे हैं। और अवश्य वह शपथ उठाते हैं कि हमारा संकल्प सिवाय अच्छाई के कुछ नहीं है। और अल्लाह/भगवान गवाही देता है कि निश्चित ही वे लोग अवश्य झुठे हैं।

التُورَةِ ٩

وَالَّذِيْنَ الَّنَّكُنُ وَا مَسْجِكًا ضِرَارًا وَّلِفُرَاوَتُفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ حَارِبَ اللَّهَ وَلِسُولَهُ مِنْ قَبْلُ وَلِيْحَافُنَ إِنَ ارْدُنَا وَلِيْحَافُنَ اللَّهُ وَلِسُولَهُ وَاللَّهُ يَشْهَلُ إِنَّهُ مُراكِذِنَا وَاللَّهُ يَشْهَلُ إِنَّهُمْ لِكَانِ بُونَ

प्रश्न और उत्तर

अल-जुमा 62

2.3सी ने उम्मियों/माँ वालों में उनमें से रसूल/संदेशवाहक नियुक्त किया है वह उन पर उसकी आयात/निशानियाँ पाठ करता है और उनको न्यायोचिता करता है, और उन सबको किताब और हिकमत/बुद्धिमता का इल्म/ ज्ञान देता है, और इससे पहले वे अवश्य स्पष्ट पथश्चष्टता में थे।

3.और उनमें से दूसरे लोग जो उनके साथ मिले नहीं हैं (रसूल/संदेशवाहक नियुक्त करता है)। और वह ज़बरदस्त, हिकमत वाला/तत्वदर्शी है।

الجنعة ٦٢

هُوَالَّذِئُ بَعَثُقِ الْاِقِبِّنَ رَسُوَلًا مِنْهُ مُنْتُلُواْ عَلَيْهِ مُالْيَتِهِ وَيُؤَلِّيهِمُ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتْبُ وَالْحِكْ وَإِنْ كَانُوْامِنْ قَبْلُ لَغِیْ ضَلْلِ مُّبِینِ نِ

> قَاْ حَرِيْنَ مِنْهُمُّرِ لَمَّايِلُحَقُّوْ إِبِهِمُّ وَهُوَالْعَزِيْزُالْحُكِيْمُ

अज़-ज़ुख़रुफ़ 43

31.और उन्होंने कहा कि यह
कुरआन/पढ़ाई दोनों बस्तियों/
शहरों (ताइफ़ व मक्का) के
किसी अज़ीम/बड़े पुरुष पर
क्यों अवतरित नहीं किया
गया?

ٱلنُّرُخُرُفِ ٤٣

ٷ**ٵٷؙٳٷڵٳڹٛڗڵۿؽٵڷڨؙ**ۯ۠ٳؽ ۼڵؽۯڿڸ ڡ۪ۜڹٵڶۛۊؙؽڰؽؙڹٷۼڟؚؽۄؚؚؚ[۞]

प्रश्न1.अल्लाह/भगवान उम्मुल कुरा में कैसे रसूल/संदेशवाहक नियुक्त करता है?

अल-बक्ररा 2

118.और वह लोग जो इल्म/ज्ञान नहीं रखते कहते हैं कि अल्लाह/ भगवान हमसे कलाम/बातचीत क्यों नहीं करता, या हमारे पास कोई आयत/निशानी क्यों नहीं आती। जो लोग उनसे पहले थे वह भी उन्हीं के क़ौल/कहे हुए के मिस्ल/अनुरूप यही कहा करते थे, उनके दिलों में मिलता जुलता पन है। निश्चित ही हम भरोसा करने वालों के लिए अपनी आयतों/निशानियों को स्पष्ट तौर पर विवरण करते हैं।

اَلۡبَقَرَةِ ٢

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ كُوْلِا يُكِلِّمُنَا اللهُ اُوْتَاتِيْنَا اليَّا كُلْ الكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْكَ قَوْلِهِمْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْكَ قَوْلِهِمْ تَشَابَهَتْ قُلُو بُهُمْ مُرْ قَدُ بَيْنَا الْإِيْتِ لِقَوْمِ يُوْقِوْنُ وَنُوْنَ ﴿

प्रश्न2.क्या अल्लाह/भगवान हर युग में केवल एक व्यक्ति से ही बातचीत करता है?

अल-अनआम 6

124.और जब उनके पास कोई आयत/निशानी आती है तो कहते हैं कि हम कदापि ईमान/ विश्वास ना लाएंगे. जब तक कि हमें उसकी मिस्ल/अनरूप ना दिया जाए जैसा कि अल्लाह/ भगवान के रस्लों/संदेशवाहकों को दिया गया है, अल्लाह/ भगवान अधिक इल्म/ज्ञान रखता है कि वह अपनी रिसालत/संदेशों को कहां बनाता है, अनक़रीब/ शीघ्र वे लोग जिन्होंने अपराध किए हैं अल्लाह/भगवान के निकट छोटे होंगे, और उन्हें कठोर सजा है साथ जो वह आयोजन बनाते थे।

الأنعامر

وَإِذَا جَآءَتُهُمُ اَيَةٌ قَالُوْالَنُ ثُوْمِنَ حَتَّى نُوْتِي مِثْلَ مَا اُوْتِي رَسُلُ اللَّهُ اللَّهُ اعْلَمُ حَيْثُ اللَّهُ اعْلَمُ حَيْثُ اللَّهُ اعْلَمُ حَيْثُ اللَّهُ الْمُؤَامِّكُوْوْنَ عَاكَانُوْا مِنْكُووْنَ عَاكَانُوْا مِنْكُووْنَ

आल-ए-इमरान 3

179.अल्लाह/भगवान मोमिनों/ विश्वासियों को उस स्थिति में नहीं छोडेगा जिस पर वह थे। यहाँ तक कि वह ख़बीस/ब्री नीयत रखने वाले को तय्यब/ विशिष्ट/अच्छी नीयत रखने वाले से पृथक/अलग कर देगा। और अल्लाह/भगवान (ऐसा) नहीं है कि तुम्हें परोक्षा/ अनुपस्थिति पर सूचित करे और लेकिन अल्लाह/भगवान रस्लों/संदेशवाहकों में से जिसे चाहता है चुन लेता है, बस अल्लाह/भगवान और उसके रस्लों/संदेशवाहकों के साथ ही ईमान/विश्वास लाओ और यदि तुम ईमान/विश्वास लाओगे और परहेज़ करोगे बस तुम्हारे लिए बडा प्रतिदान है।

ال عِمْرانَ ٢

مَاكَانَ اللهُ لِكَنَّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى مَاآنَتُمُ عَلَيْهِ حَتَّى مَمِيْزَ الْخَبِيْثُ مِنَ الطَّرِيّبِ وَمَاكَانَ اللهُ لِيُطْلِعَكُمُ عَلَى الْخَيْبِ لِيُطْلِعَكُمُ عَلَى الْخَيْبِ وَلِكِنَّ اللهُ مَنْ يَشَاءُ مَنْ مَنْ تُسُلِهِ مَنْ يَشَاءُ مَنْ فَالْمِنُوْ الْإِللّٰهِ وَرُسُلِهٖ فَالْمِنُو الْإِللّٰهِ وَرُسُلِهٖ

अल-अनआम 6

8.और उन्होंने कहा कि उस पर
क्यों न एक फ़रिश्ता/देव दूत
अवतरित किया गया, और यदि
हम एक फ़रिश्ता/देवदूत अवतरित
कर देते तो मामला पूरा हो जाता
फिर वे अवकाश/मुहल्लत न दिए
जाते।



9.और यदि हम एक फ़रिश्ता/देव दूत को रस्ल/संदेशवाहक बनाते, तो उसको भी एक मर्द/पुरुष ही बनाते और अवश्य हमने पहनाया उन सब पर जो वह पहने हुए हैं।

ٷٷؘؚۘۘۘۘۘۼۼڶڹؙؙؙؙ۠ؗڡٛڡٲڴٵڲۜۼڶڹؙ۠ؖ ڒۻؙڰڒٷڵڶڹۺڹٵ ۼڵؽ_{ؙؠ}ؗۿۄٞٵؽڶؠؚۺؙٷؽ۞

प्रश्न3.क्या जिबराईल फ़रिश्ते/देव दूत ने मुहम्मद (स.) पर कुरआन अवतरित किया?

अल-इसरा 17

95.कह दे अगर धरती में फ़रिश्ते इत्मिनान/संतोष से चल फिर रहे होते तो अवश्य हम उन पर आकाश से फ़रिश्ता रसूल/ संदेशवाहक अवतरित करते।

اَلْاسْراءِ ١٧

قُلُ تُؤكان فِي الْأَرْضِ مُلَلِكَةٌ گَمُشُونَ مُطْمَيِتِّيْنَ لَنَزَّلْنَاعَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَاءَ مَلَكًا رَّسُولًا

94.और लोगों को किसने रोका कि वह ईमान/विश्वास लाते जबकि उनके पास मार्गदर्शन आया सिवाय यह कि उन्होंने कहा कि अल्लाह/भगवान ने बशर/ व्यक्ति को रस्ल/संदेशवाहक नियुक्त किया है। وَمَامَنَعَ النَّاسَ اَنَ يُؤْمِنُوَّا اِذْجَاءُهُمُ الْهُلَى اِذْجَاءُهُمُ الْهُلَاى اِلْاَانَ قَالُوْااَبَعَثَ اللهُ بَشُرًا لِّسُوْلًا ﴿

अल-फ़ुरक़ान 25

41.और जब भी वे तुझे देखते हैं
तो तुझ से हँसी मज़ाक/उपहास
करने लगते हैं कि क्या यही
है वह जिसे अल्लाह/भगवान
ने रसूल/संदेशवाहक बनाकर
भेजा है।

أَلْفُرُقَانِ ٢٥

ۅؙٳۮٳۯٳٷٛٛٛ ٳڽٛؾڲڿڽؙۏؽڮٳڵٳۿۏ۠ٷٳ ٳۿؙڬٳٳڵۮؽ ڹۼۘۘػٳڵڷ۠ٷڒٛٷڒ۞

यासीन 36

14.िफर जब हमने उनकी ओर दो को भेजा। बस उन्होंने उन दोनों को झुठलाया। फिर हमने ताक़त/ शक्ति दी तीसरे के साथ बस उन्होंने कहा कि वास्तव में हम तुम्हारी ओर भेजे हुए रसूल/ संदेशवाहक हैं। يش ۲۶

ٳۮ۬ٲۯؗڛڵڹؙٵۜٳڵؽۿؚۄؙٳؿٝؽؽڹ ڡؙڰڷؙؠؙٷۿؠٵڡؘٛۼڒٞۯؚ۬ؽٳڹؿؘٳڸؿؚ ڡٛڨٵٮٷؘٳٳڽؙۜٳڵؽڮؽؙۄٞڞ۠ۯڛڵٷؽ

15.उन्होंने कहा कि तुम तो हमारे ही जैसे बशर/व्यक्ति हो। और रहमान/कृपावान ने किसी चीज़ से अवतरित नहीं किया। और निश्चित ही तुम सब झूठ बोल रहे हो। قَالُوْا مَاۤاَڬٛتُمُّوٰالِّا بَشَكَّ مِّ تَثَلُنَا لَا وَمَاۤا نَزُلَ الرَّحْمٰنُ مِنۡ شَنَی ﷺ إِنۡ اَنۡتُمُ اِلْاَ تُکۡنِ بُوۡنَ ۞

16.3 न्होंने कहा कि हमारा रब/
पालनेवाला जानता है कि निश्चित
ही हम अवश्य तुम्हारी ओर
भेजे हुए रसूल/संदेशवाहक हैं।

قَالُوْارَبُّنَايَعُكُمُ إِنَّا َ اِلْيُكُمُّ لَمُرْسَلُوْنَ ۞

17.और हमारे ऊपर सुस्पष्ट संदेश पहुंचा देना ही है। وَمَاعَكَنِنَاۤ الْآ الْبَالْغُ الْمُبِينُ ⊛

फ़ुस्सीलत 41

6.कह दे कि मैं तो बस तुम्हारी ही तरह एक बशर/व्यक्ति हूँ। मुझ पर वहयी/प्रेरणा की गई है कि निश्चित ही तुम्हारा माबूद/स्वामी एक स्वामी है। बस तुम उसी की बंदगी/नौकरी के लिए क़ायम/स्थापित रहो। और उसी से क्षमा चाहो। और सहभागिता करने वालों के लिए तबाही है।

فُصِّلَتُ ٤١

قُلُ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِنْلُكُمُ يُوْخَى إِلَّى اَنَّهَا الهُكُمُ اللهُ قَاحِدٌ فَاسْتَغْفِرُوْهُ وَاسْتَغْفِرُوْهُ وَوَيْلٌ لِلْمُنْهِ رِكِينَ ۚ

अल-कुरआन क्या कहता है

महम्मद शेख के बारे मे

- 01. रेहान अल्लाहवाला द्वारा मुहम्मद शेख का इंटरव्यू (2011)
- 02. अहमद दीदात द्वारा वैश्विक छात्रों का दावा प्रशिक्षण, IPCI डरबन SA (1988)
- 03. मुहम्मद शेख का क़रआन से मार्गदर्शन का सफ़र ? (2010)
- 04. मुहम्मद शेख पर जानलेवा हमला (2005)
- 05. महम्मद शेख की जबल-ए-न्र की यात्रा (2006)
- 06. महम्मद शेख दवारा किया गया हज (2006)
- 07. मुहम्मद शेख दवारा किया गया उमरा (2006)
- 08.महम्मद शेख दवारा खतम-ए-क़रआन की दुआ (2005 के बाद)

बहस

- 11. मुहम्मद शेख की इस्माईली डॉक्टर से बहस। (1989) (उर्द्)
- 12. प्रश्नोत्तर: महम्मद शेख और पत्रकार (2008) (उर्द्)
- 13. महम्मद शेख की परवेज़ी को मानने वालो से बहस (2013) (उर्द्)
- 14. मुहम्मद शेख की दो सोमाली इमामों से बहस(अंग्रेजी) (2013)
- 15. मुहम्मद शेख की पादरी जेफ़री राइट से बहस (2013) (अंग्रेजी)
- 16. प्रश्नोत्तर : महम्मद शेख और अमेरिकी लोग (2013)(अंग्रेजी)
- 17. प्रश्नोत्तर : महम्मद शेख और कनाडा के लोग (2013)(अंग्रेजी)
- 18. मुहम्मद शेख की कनाडा में अहमदी मुस्लिमो से बहस(2013)(अंग्रेजी)
- 19. महम्मद शेख की मुफ्ती अब्दल बाक़ी से बहस (2016) (उर्द)
- 20. मुहम्मद शेख ने दुबई के लोगों को आमंत्रित किया (2018)(अंग्रेजी)

अपने भगवान को पहचानें

- 21. अल-कुरआन क्या कहता है भगवान और भगवानों के बारे में(2011)
- 22. अल-कुरआन क्या कहता है शैतान/इब्लीस के बारे में(2004)

चुने गए व्यक्तित्व

- 23. इब्राहिम का ख़्वाब(PBUH) (2011))
- 24. मुसा की किताब(PBUH) (2011)
- 25. मरयम (PBUH)(2009)
- 26. क्या मरियम अल मसीह ईसा की एकमात्र माता-पिता हैं?(PBUH) (2013)(अंग्रेजी)
- 27. अल मसीह ईसा इब्ने मर्यम(PBUH) (2006)
- 28. अल मसीह ईसा की भविष्यवाणियाँ उनके जीवन और मृत्यु के बारे में। (2013)(अंग्रेजी)
- 29. महम्मद (PBUH) (2002)
- 30. मुसा का पहाड़ (PBUH) (2017)

अल्लाह / भगवान की किताब

- 31. अल -किताब (2011)
- 32. अल-क क्रआन(1991, 2008)
- 33. अल्लाह/भगवान की किताब (2017)(अंग्रेजी)
- 34. क्या कुरआन अल्लाह / भगवान का कलाम/शब्द है?
- 35. तोरात और इंजील (2007)(2011)
- 36. जबूर (2008)
- 37. हदीस (2005)
- 38. सुन्नत (2004)
- 39. हिंकमत (2008)
- 40. रूह (2008)
- 41. जवाने/भाषाएं (2008)
- 42. हिदायत /मार्गदर्शन (2009)

वक्ता मुहम्मद शेख के द्वारा

<u>अपनी</u> पहचान/खुद को जाने [°]

- 51. मुस्लिम (1991, 2004)
- 52. अहले किताब (किताब के लोग) (2006)
- 53. बनी इसराईल (इसराईल के बेटे) (2003, 2011)
- 54. औलिया/रक्षक) (2011)
- 55. खलीफा/उत्तराधिकारी (2013)
- 56 इमाम (2013)
- 57. फिरके/संप्रदाय
- 58. मुनाफिक
- 59. यहदी और ईसाई (2008)
- 60. अल्लाह बशर/इंसान से कैसे कलाम/बात करता है? (2019)

पारिवारिक जीवन

- 61. हिजाब/पर्दा (2011)
- 62. निकाह/विवाह (2009)
- 63. मिया बीवी/पति- पत्नी के संबंध (2011)
- 64. फाहिशा/अश्लीलता (2008)
- 65. तलाक (2009)
- 66. माता-पिता और बच्चो का संबंध (2010)

पैसे को कैसे संभालें

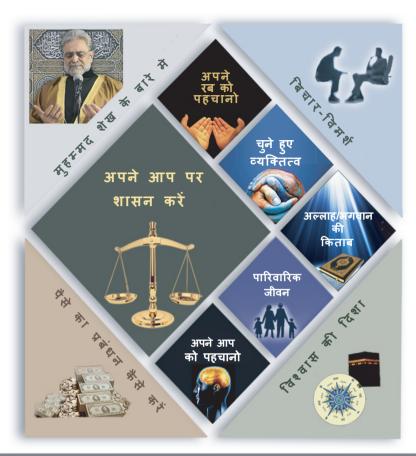
- 71. सदका और जकात/दान पुण्य (2006)
- 72. रिबा/बढोतरी (2006)
- 73 विरासत

विश्वास की दिशा

- 81. इस्लाम और मुस्लिम (पाकिस्तान अमेरिकी सांस्कृतिक केंद्र) (1991) (अंग्रेजी)
- 82. इस्लाम (2004)
- 83. इबराहीम का मजहब/धर्म (PBUH) (2010)
- 84. सीधा रास्ता (2013)
- 85. सिफारिश (2010)
- 86. कावा और क़िब्ला (2007)
- 87. मस्जिद (2013)
- 88. सलाह/प्रार्थना (2011)
- 89. महतर्म महीने/वर्जित महीने (2006)
- 90. रोजा/व्रत (2008)
- 91. उमरा और हज (2013)
- 92. उम्म-उल-क्रा/शहरों की मां (2019)

ह्कुम वाली आयात से अपने आप को नियंत्रित करे

- 101. जिहाद/संघर्ष (2006)
- 102. कत्ल/शारीरिक हत्या (2005)
- 103. नफसियाती कत्ल/मनोवैज्ञानिक हत्या (2010)
- 104. देहशतगरदी/आतंकवाद (2006)
- 105. जंग/युद्ध (2006)
- 106. किसास/बदल (2012)
- 107. नफसियाती जख्मों की तसल्ली/मानसिक दर्द की तसल्ली (2012)
- 108. अखलाक/अच्छा व्यवहार



एक गैर-लाभकारी धर्मार्थ संगठन है जो जरूरतमंदों, अनाथों, गरीबों और बेघरों की मदद करने में व्यस्त है, चाहे उनका धर्म और रंग कुछ भी हो। अंसाररुल्लाह / अल्लाह के सहायक बनने के लिए हमारे साथ हाथ मिलाएं, स्वयंसेवक बनें और दावा के हमारे मिशन का समर्थन करें, यानी दुनिया की जनता के लिए अल-इस्लाम का निमंत्रण। अल्लाह आपको पुरस्कृत करे और इस दुनिया में और उसके बाद (आमीन) आपकी उदारता के लिए आशीर्वाद दे।

दान करे ओर संपर्क करे :www.iipccanada.com/donate/

